म्रतिहर्षययात्राश्कायां याति च शीतलाम् । शीतलाम्य पुनर्याति का कस्य परिदेवना ॥ ५५॥

Von langem Wege Ermüdete begeben sich in kühlen Schatten und gehen erfrischt wieder von dannen. Wem also ziemt zu jammern?

म्रतिपरिचपादवज्ञा संततगमनादनादरेग भवति । लोकः प्रयागवासी कूपे स्नानं समाचरति ॥ ५६ ॥

Durch allzugrosse Vertrautheit entsteht Geringschätzung, durch beständiges Besuchen Gleichgültigkeit: die Anwohner der heiligen Stätte, wo Gangâ und Jamunâ sich vereinigen, baden sich in einem Brunnen.

म्रतिमलिने कर्तव्ये भवति खलानामतीव निषुणा घीः । तिमिरे क्ति काशिकाना द्वपं प्रतिपद्यते दृष्टिः ॥ ५७ ॥

Gilt es etwas Böses zu thun, so erweist sich der Bösen Verstand als überaus geschickt: im Finstern erfasst ja der Eulen Auge die Gestalt.

श्रितिद्वपे कृता मीता क पः श्रित्वानाहिलर्बह्वाः श्रितिलोभा न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत् । श्रितिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके ॥ ५०॥

Man fröhne nicht zu heftiger Begierde, doch gebe man die Begierde nicht ganz auf: wer von zu heftiger Begierde ergriffen wird, über dessen Haupte tanzt ein Rad.

त्रतिव्यया अनपेता च तथार्जनमधर्मतः । घाषणं द्वरसंस्थानं काषव्यसनमुच्यते ॥ ५१॥

Verschwendung, Sorglosigkeit, unrechtmässiges Erwerben, lautes Ausposaunen und weite Entfernung nennt man des Schatzes Verderben.

LAN. B', 1. Im ÇKDB. u. म्रतिदान lautet der Spruch des KAŅ.: म्रतिदाने विलर्ब हा म्रति-माने च कारवाः। म्रतिद्रपे व्हता मीता मर्वम्त्यनगर्कितम्॥ KAŅ. 50 bei HABB. S. 316: म्रतिद्रपे कृता लङ्का म्रतिमाने च कारवाः। म्रतिद्रपे कृता लङ्का म्रतिमाने च कारवाः। म्रतिदाने विलर्बद्यः सर्वमत्यनगर्कितम्॥ VBT. in LA. S. 37: म्रतिद्रप (lies: व्ह्रपे) व्हृता मीता म्रतिगर्वेण रावणः। म्रतिदान (lies: व्हाने) विलर्बद्य म्रति सर्वत्र वर्षयेत्॥

- 55) GHAȚAKARPARA, Nîtis. 15 bei HAEB. S. 506.
- 56) Çîrãc. Paddu. Niti 83. b. गमनादना-द्री unsere Verbesserung für गमनादनारा und गमनानिराद्रा. c. लोक.
- 57) Çârñg. Paddh. Durgananındâ 5 und 6. d. রুণ কি দনি°.
 - 53) Pańkar. V, 20. Vgl. oben Spruch 50.
- 59) Hir. II, 90. a. ऽनवेता. e. मात्तपां und काषापां st. घाषपां.